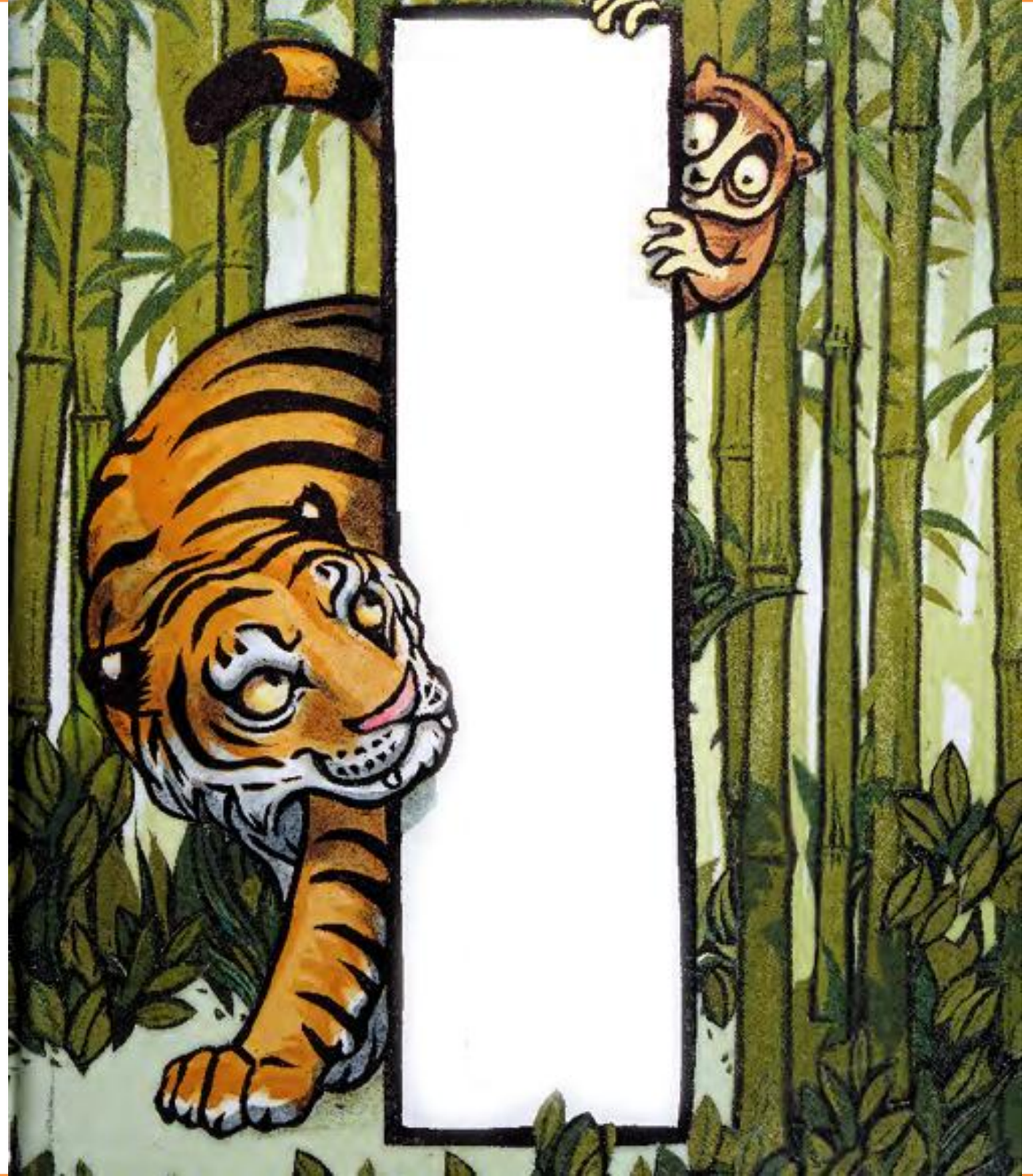

ओह, नहीं!

ओह, नहीं!

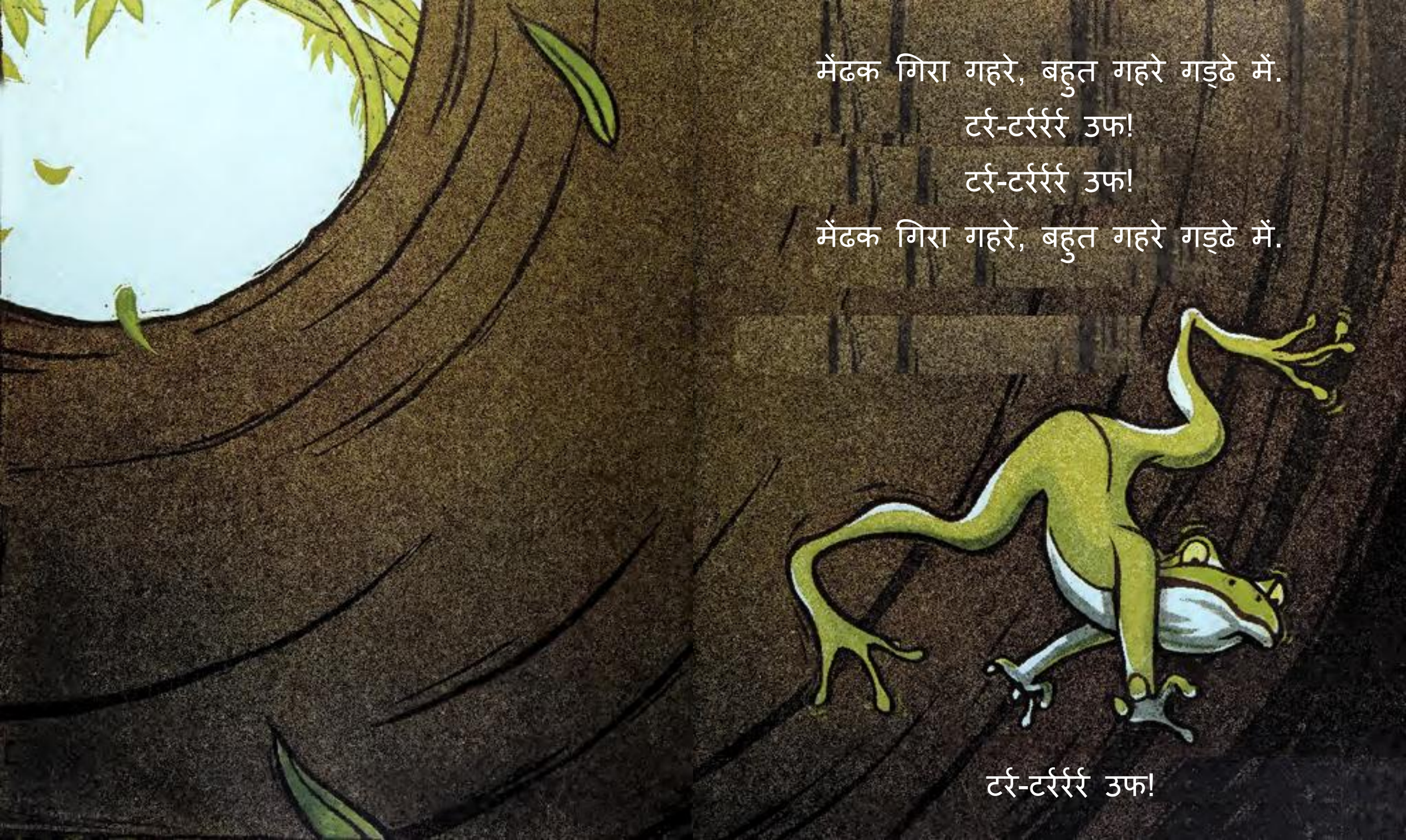

मेंढक गिरा गहरे, बहुत गहरे गड्ढे में.

टर्र-टर्रर्र उफ!

टर्र-टर्रर्र उफ!

मेंढक गिरा गहरे, बहुत गहरे गड्ढे में.

टर्र-टर्रर्र उफ!

मेंढक गिरा इतने गहरे गड्ढे में,
अपनी जान बचाने को निकल न पाया बाहर.
मेंढक चिल्लाया, “मदद करो! निकल नहीं
सकता मैं बाहर!”

एक चूहा आया, पर कर सकता था वह भी क्या?

पिप्पा-इइइक!

पिप्पा-इइइक!

एक चूहा आया, पर कर सकता था वह भी क्या?

पिप्पा-इइइक!

चूहा था इतना छोटा, कर सकता था वह भी क्या?

उसने किया नीचे पहुँचने का प्रयास

वह भी गिर गया गड्ढे में.
वह किकियाया, “हम फंस गये!
निकल नहीं सकते हम बाहर!”

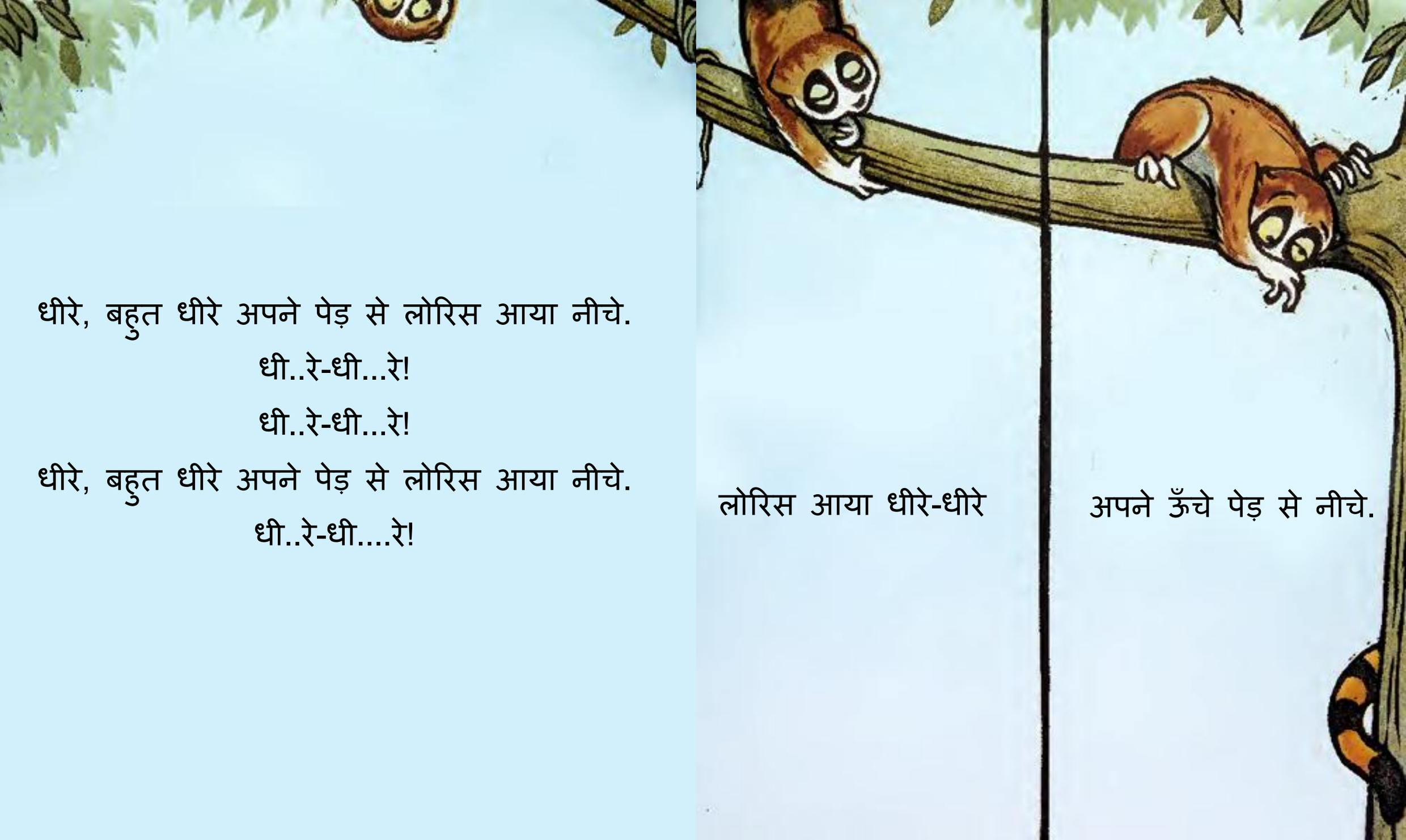

धीरे, बहुत धीरे अपने पेड़ से लोरिस आया नीचे.

धी..रे-धी...रे!

धी..रे-धी...रे!

धीरे, बहुत धीरे अपने पेड़ से लोरिस आया नीचे.

धी..रे-धी....रे!

लोरिस आया धीरे-धीरे

अपने ऊँचे पेड़ से नीचे.

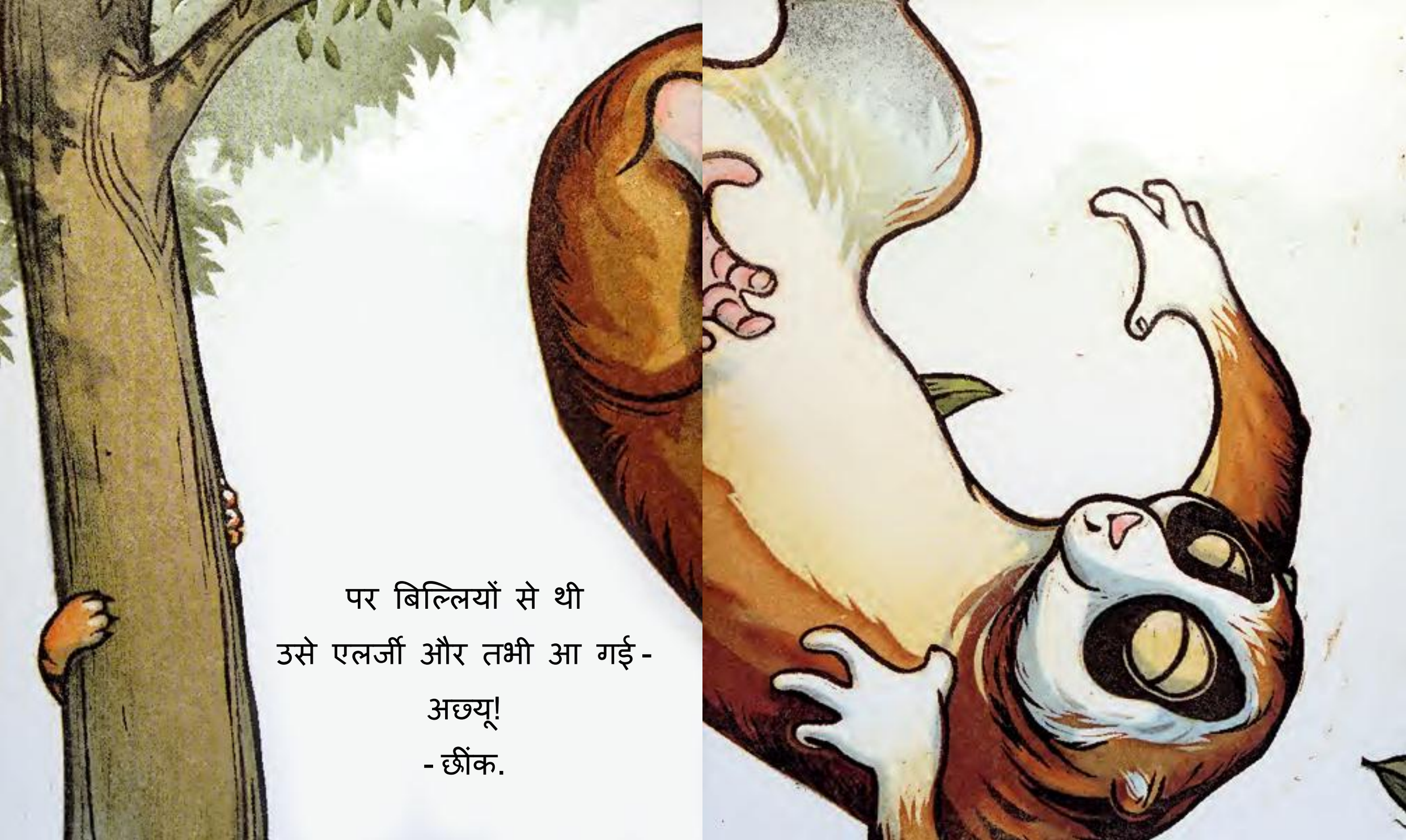

पर बिल्लियों से थी
उसे एलर्जी और तभी आ गई -
अछ्यू!
- छींक.

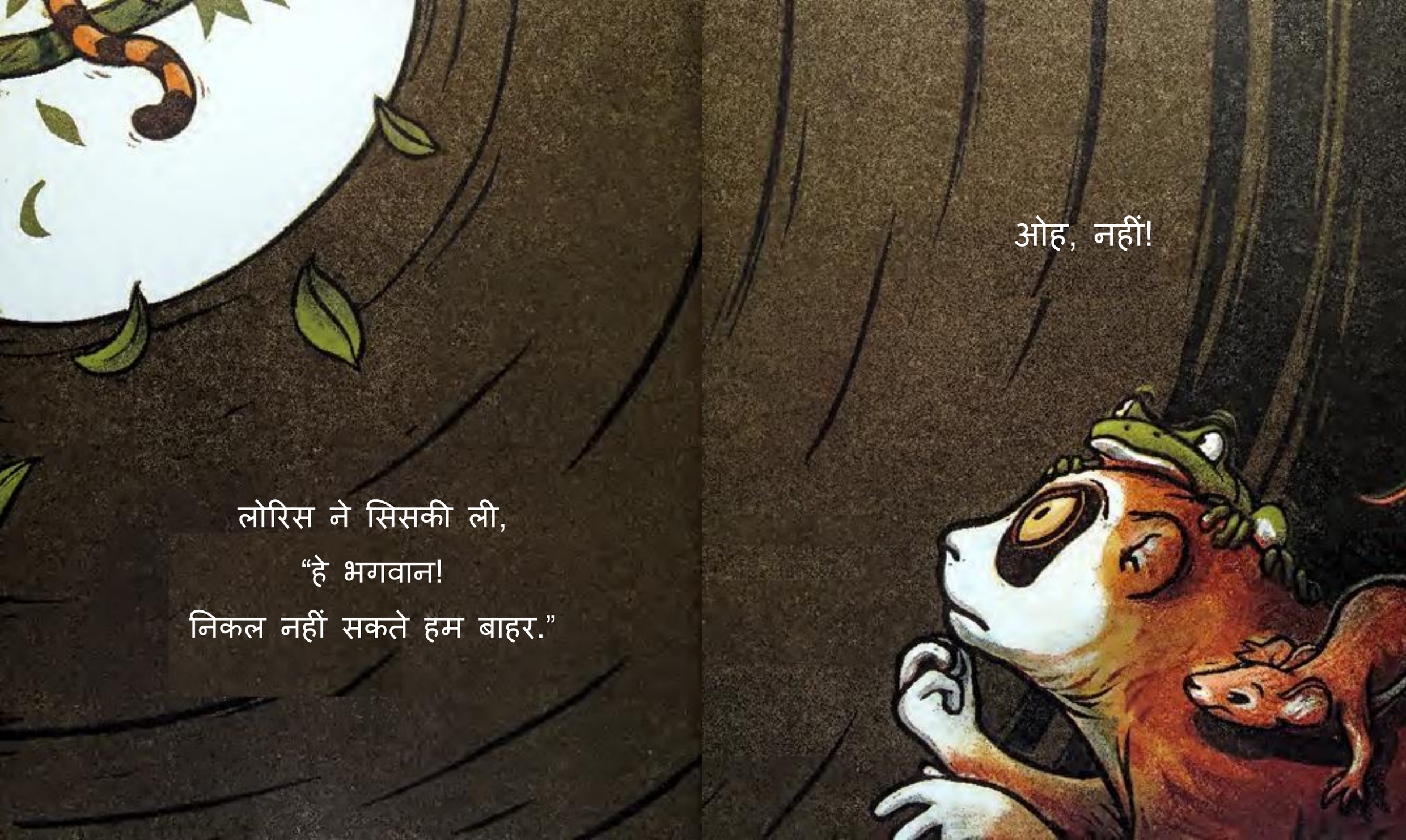

लोरिस ने सिसकी ली,
“हे भगवान!
निकल नहीं सकते हम बाहर.”

ओह, नहीं!

भालू ने एक बड़ी लंबी डाल नीचे लटकाई

पकड़ लो इसे!

पकड़ लो इसे!

भालू ने एक बड़ी लंबी डाल नीचे लटकाई

पकड़ लो इसे!

भालू ने एक लंबी, बहुत लंबी डाल नीचे लटकाई

लेकिन गड्ढे में गिरे पशु थे सब इतने भारी

वह डगमगाया....

फिर लड़खड़ाया.....

धड़ाम!
भालू बड़बड़ाया,
“दुर्भाग्य! निकल नहीं सकते हम बाहर!”
ओह, नहीं!

बंदर झूला हाथ में थामे
अपनी कुड्ज़ू बेल
व्ही-हा...आ!
व्ही-हा...आ!

बंदर झूला हाथ में थामे
अपनी कुड्ज़ू बेल
व्ही-हा...आ!

खूब मज़े कर रहा था
बंदर अपनी कुड्ज़ू बेल पर,
देख न पाया पेड़ को वह
और हो गई उसकी टक्कर.

बंदर पीड़ा में चिल्लाया,
“आह! आऊ!
निकल नहीं सकते हम
बाहर!”
ओह, नहीं!

अब बाघ चोरी-छिपे आया और लगा चाटने अपने होंठ.

स्लॉप-स्लर्प!

स्लॉप-स्लर्प!

बाघ चोरी-छिपे आया और लगा चाटने अपने होंठ.

स्लॉप-स्लर्प!

बाघ ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं और लगा चाटने होंठ.

इतनी स्वादिष्ट दावत देख कर आ गई चेहरे पर मुस्कान.

धीमी आवाज़ में बाघ ने कहा, “मैं आया हूँ तुम्हारी सहायता करने.”

ओह, नहीं!

फिर धरती लगी गड़गड़ाने और लगी थर-थर कांपने.

बा-बूम!

बा-बूम!

धरती लगी गड़गड़ाने और लगी थर-थर कांपने.

बा-बूम!

धरती लगी गड़गड़ाने और लगी खूब ज़ोर से थरथराने.

और देखो कौन आ गया उन्हें मुसीबत से आज बचाने.....

ध...डु...धी!

हु....र्रे!
ओह, नहीं!

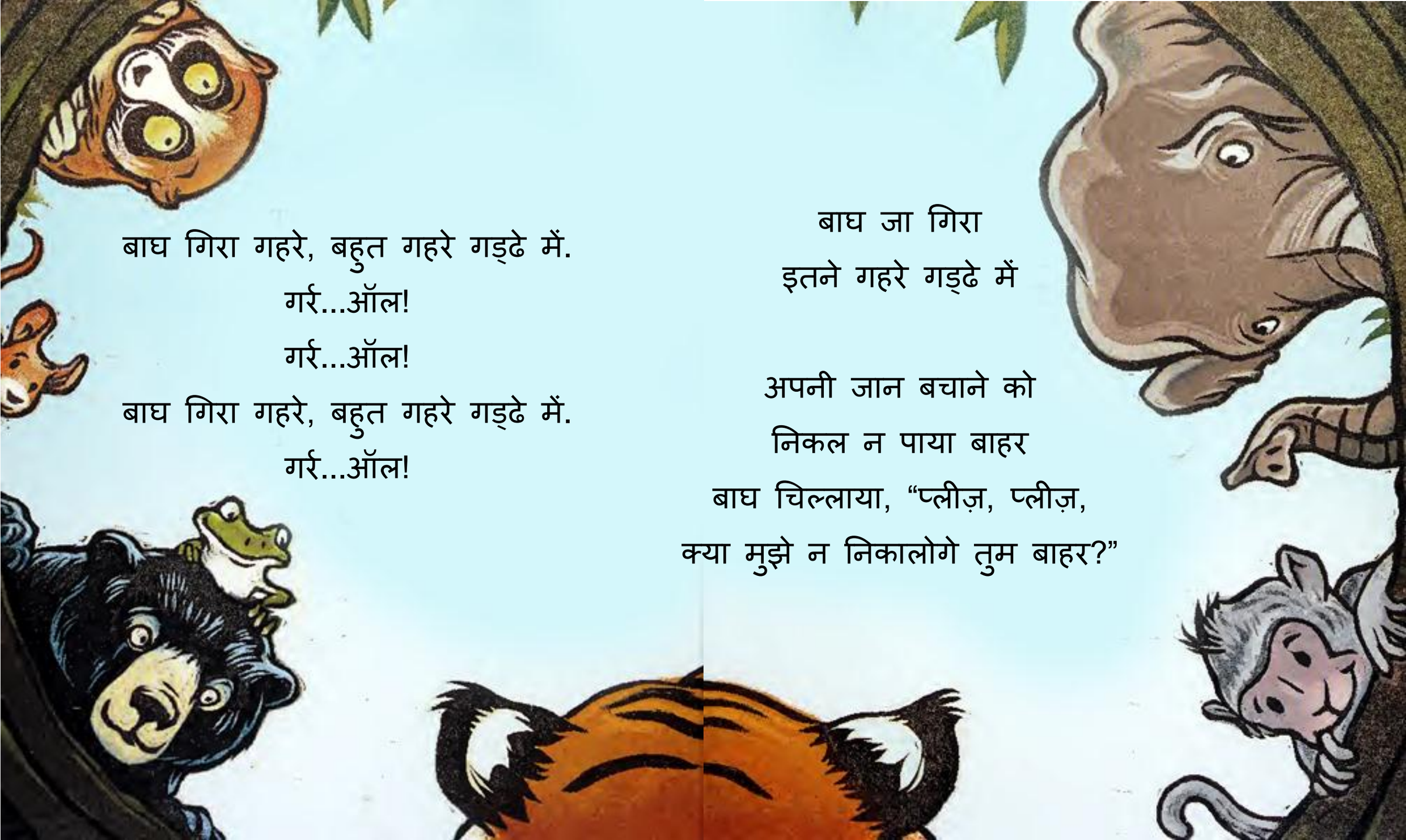

बाघ गिरा गहरे, बहुत गहरे गड्ढे में.
गर्र...ऑल!
गर्र...ऑल!
बाघ गिरा गहरे, बहुत गहरे गड्ढे में.
गर्र...ऑल!

बाघ जा गिरा
इतने गहरे गड्ढे में

अपनी जान बचाने को
निकल न पाया बाहर
बाघ चिल्लाया, “प्लीज़, प्लीज़,
क्या मुझे न निकालोगे तुम बाहर?”

ओह, नहीं!